पौध संरक्षण

खेती री बातां

फव्वारा से सिंचाई करें।

वर्ष–16 अंक–2 मासिक पत्रिका आर.एन.आई – 70296/98 5 फरवरी 2013 वार्षिक शुल्क –12 रूपये

राजस्थान को लगातार दूसरे वर्ष ''कृषि कर्मण पुरस्कार''

जयपुर, 15 जनवरी। राजस्थान को लगातार दूसरे वर्ष **खाद्यान्न उत्पादन व उत्पादकता** में उल्लेखनीय वृद्धि के लिए राष्ट्रपति श्री प्रणब मुखर्जी ने ''कृषि कर्मण पुरस्कार'' देकर सम्मानित किया है।

नई दिल्ली में आयोजित समारोह में राष्ट्रपति श्री प्रणब मुखर्जी के हाथों से कृषि मंत्री श्री हरजीराम बुरड़क ने यह पुरस्कार ग्रहण किया। इस अवसर पर प्रमुख शासन सचिव कृषि श्री डी.बी. गुप्ता एवं आयुक्त कृषि, डॉ.आर. वेंकटेश्वरन भी मौजूद थे।

पुरस्कार ग्रहण करने के बाद कृषि मंत्री श्री बुरड़क ने बताया कि राजस्थान

राजस्थान के कृषि मंत्री, श्री हरजीराम बुरड़क, नई दिल्ली में राष्ट्रपति भवन में आयोजित समारोह में राष्ट्रपति श्री प्रणब मुखर्जी एवं कृषि मंत्री श्री शरद पंवार के हाथों ''कृषि कर्मण पुरस्कार'' प्राप्त करते हुए।

जैसे प्रायः सूखा एवं अकाल प्रभावित रहने वाले राज्य में गत पांच वर्षों के औसत की तुलना में कुल 32 प्रतिशत अधिक खाद्यान्न (32 प्रतिशत अनाज व 34 प्रतिशत दलहन) का उत्पादन हुआ है, जो कि एक गर्व की बात है। इसका श्रेय राज्य के किसानों को देते हुए उन्होंने कहा कि यह वृद्धि राज्य के कृषकों द्वारा नवीन तकनीकी अपनाने, कृषकों के प्रयास एवं विभागीय कार्यक्रमों आदि के सम्मिलित प्रयासों से ही संभव हो सकी है।

वर्ष 2010–11 में भी भारत सरकार द्वारा राज्य को दलहनी फसलों के अधिकतम उत्पादन के लिए राजस्थान के मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत एवं कृषि मंत्री श्री हरजीराम बुरड़क को प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह व केन्द्रीय कृषि मंत्री शरद पंवार के हाथों प्रथम पुरस्कार स्वरूप एक करोड़ रूपए की नगद राशि एवं प्रशंसा पत्र प्रदान किया गया था।

सभी किसान भाइयों को 64 वें गणतन्त्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

–सम्पादक

प्रत्येक फसल के बीज उत्पादन एवं वितरण के लिये अलग से अनुदान दिया जाये

जयपुर, 15 जनवरी। कृषि मंत्री श्री हरजीराम बुरड़क ने नई दिल्ली में आयोजित समारोह में राष्ट्रपति श्री प्रणब मुखर्जी के हाथों ''कृषि कर्मण पुरस्कार'' प्राप्त करने के बाद केन्द्र सरकार से ग्वार, मोठ, बीजीय मसाला व औषधीय फसलों का वाजिब समर्थन मूल्य घोषित करने का आग्रह करते हुए कृषकों को प्रत्येक फसल की उच्च गुणवत्तायुक्त किस्मों के बीज उत्पादन एवं वितरण के लिये पृथक से अनुदान दिये जाने की मांग की है।

श्री बुरड़क ने कहा कि अच्छी पैदावार होने के बाद फसलों के बाजार मूल्य गिर जाते हैं, जिससे किसानों को उनकी फसल का उचित मूल्य प्राप्त नहीं हो पाता है।

कृषि मंत्री ने कहा कि राज्य में ''वर्षा आधारित क्षेत्र विकास कार्यक्रम'' के अन्तर्गत वर्ष 2012–13 में 19 जिलों में 50 हजार हैक्टर क्षेत्रफल में प्रदर्शनों का आयोजन किया गया है। इस योजनान्तर्गत खरीफ 2012 में 1,12,671 कृषकों को लाभान्वित किया गया है। उन्होंने राज्य की भौगोलिक परिस्थितियों एवं आवश्यकताओं को देखते हुए केन्द्र सरकार से विशेष योजनाएं बनाने का आग्रह करते हुए केन्द्रीय प्रवर्तित योजनाओं, जिनमें ''राष्ट्रीय कृषि विकास योजना'' एवं ''राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा मिशन'' प्रमुख हैं, में अधिक राशि आवंटित किये जाने की मांग की है।

उन्होंने कहा कि राज्य में बिजली की कमी को देखते हुए नहरी क्षेत्रों में जल के कुशलतम उपयोग के लिये डिग्गियों पर सोलर पम्पसैट स्थापित कर बून्द–बून्द सिंचाई पद्धति को बढ़ावा दिया जा रहा है जिससे राज्य पर पड़ने वाले बिजली के बिल का भार कम किया जा सके।

कृषि मंत्री ने कहा कि राज्य में वर्ष 2012–13 में विश्व बैंक पोषित ''राजस्थान कृषि प्रतिस्पर्धात्मक परियोजना'' आरंभ की गई है, जिसमें भू–जल एवं सतही जल के बेहतर उपयोग पर अधिक जोर दिया गया है। इसके अतिरिक्त वर्षा आधारित क्षेत्रों में भी वर्षा जल का प्रभावी उपयोग सुनिश्चित किया जाएगा।

उन्होंने बताया कि जल के कुशलतम उपयोग एवं खाद्यान्न में वृद्धि सुनिश्चित करने के लिए राज्य में कृषकों को डिग्गी निर्माण पर 3 लाख रूपए, जल हौज एवं खेत तलाई पर 60 हजार रूपए, सिंचाई पाईप लाईन पर अधिकतम 15 हजार रूपए, सूक्ष्म–फव्वारा संयंत्र स्थापना के लिये 70 प्रतिशत तथा बूंद–बूंद सिंचाई संयंत्र स्थापना के लिये 90 प्रतिशत अनुदान दिया जा रहा है।

जायद–2013 हेतु प्रमाणित बीज की विक्रय दर घोषित

राजस्थान स्टेट सीड्स कार्पोरेशन लिमिटेड़ ने जायद–2013 हेतु मूंग के प्रमाणित बीज की विक्रय दर घोषित की है। यह दर केवल जायद–2013 (31.03.2013) तक ही प्रभावी होगी

फसल	किस्म	विक्रय मूल्य (रू./क्वि.)
मूंग	एस.एम.एल.– 668/आर.एम.जी.–492	7280
मूंग	के– 851/आर.एम.जी. 344/आर.एम.जी. 62/आर.एम.जी. 268/पी.डी.एम.–139/जी.–8	7280

हरजीराम बुरड़क, कृषि मंत्री –राजस्थान, महामहिम राष्ट्रपति प्रणब मुखर्जी एवं केंद्रीय कृषि मंत्री शरद पवार से 2011–12 का पुरस्कार प्राप्त करते हुए

अशोक गहलोत, मुख्यमंत्री राजस्थान एवं हरजीराम बुरड़क, कृषि मंत्री, राजस्थान प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह से 2010–11 का पुरस्कार प्राप्त करते हुए

E mail : kheti_ri_batan@yahoo.co.in

www.krishi.rajasthan.gov.in

इस अंक में....

★ इस माह के कृषि कार्य
★ गुणी कमला
★ परख

पृष्ठ 2

★ रबी फसलों में समन्वित कीट–रोग प्रबन्धन

पृष्ठ 3

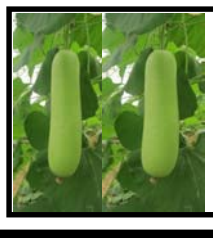

★ कुष्माण्ड कुल की सब्जियों की उन्नत खेती

पृष्ठ 4

दूरभाष – 5116240, 2227365/211

इस माह के कृषि कार्य

फसलोत्पादन

- गेहूँ की फसल में गांठ बनते समय तथा बालियां आते समय (बुवाई के 70 दिन बाद) व जौ में दूधिया अवस्था पर सिंचाई अवश्य करें।
- जायद मूंगफली की जी.जी.–2, आर.जी.–141, टी.ए.जी.–24, टी.ए.जी.–37ए, किस्मों की 100–120 किलोग्राम गुली प्रति हैक्टर बोऐं।
- जायद मूंग के लिए के–851, पी. डी.एम.–11,एसएमएल–668, पूसा बैसाखी, एस–8, एस–9, आर.एम. जी.–344, आर.एम.जी.–268, आर. एम.जी.–62 किस्म बोएं।

बागवानी

- जहाँ पर सिंचाई की सुविधा हो वहाँ नींबू, अमरूद, अनार, बेर, आंवला आदि के पौधे फरवरी माह में लगाये जा सकते हैं।
- नींबू के पौधों के मूल–वृन्त तैयार करने हेतु नर्सरी में बीजों की बुवाई करें। मूलवृन्त एक वर्ष के हो जाएं तब उन पर कलिकायन करें।
- आम, अंगूर, अमरूद में एन्थ्रेक्नोज़ रोग के नियंत्रण के लिए कॉपर ऑक्सीक्लोराइड 3 ग्राम या मैन्कोजेब 2 ग्राम दवा प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।
- आम, अंगूर व बेर में छाछ्या रोग के नियंत्रण के लिए घुलनशील गंधक 2 ग्राम या केराथियॉन 1 मिलीलीटर या केलेक्सिन 1 मिलीलीटर दवा का प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।
- नींबू में सिट्रस केंकर के नियंत्रण के लिए बोर्डो मिक्स्चर (4 : 4 : 50) या स्ट्रेप्टोसाइक्लिन

250 मिलीग्राम व बाविस्टिन 1 ग्राम दवा का प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।
- पपीते में तना गलन रोग के बचाव के लिए पानी का निकास सही करें। कैप्टान 2 ग्राम दवा प्रति लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें।

सब्जियाँ

- बैंगन, टमाटर, भिण्डी में मकड़ी, थ्रिप्स, सफेद मक्खी व हरा तेला कीटों के नियंत्रण के लिये डायमिथोएट 30 ई.सी. या मिथाइल डिमेटोन 25 ई.सी. या मैलाथियॉन 50 ई.सी. दवा 1 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।
- ग्रीष्मकालीन भिण्डी की बुवाई करें। गर्मी की फसल हेतु बीज दर 20 किलो प्रति हैक्टर की दर से उपयोग करें। इसमें कतार से कतार

की दूरी 30 सेन्टीमीटर एवं पौध से पौध की दूरी 12–15 सेन्टीमीटर रखें। भिंडी की पूसा सावनी, पूसा मखमली, परभनी क्रान्ति, अर्का अभय व अर्का अनामिका किस्में बुवाई के लिए ली जा सकती हैं।
- बैंगन, टमाटर, कुष्माण्ड कुल एवं पत्तियों वाली सब्जियों में झुलसा रोग के नियंत्रण के लिए मैन्कोजेब या टोप्सिन–एम या जाइनेब 2 ग्राम दवा प्रति लीटर पानी की दर से छिड़काव करें।

- प्याज की रोपाई के 30–45 दिन बाद फसल में 50 किलो नत्रजन (110 किलो यूरिया) प्रति हैक्टर की दर से देवें तथा सिंचाई करें।
- पिछेती बोई गई आलू की फसल की देखभाल करें। बुवाई के 30–35 दिन बाद 125–150 किलो यूरिया प्रति हैक्टर की दर से मिट्टी चढ़ाते समय देवें।

परख

जनवरी, 2013 के अंक में प्रकाशित आलेख में से दो प्रश्न पूछे गये थे। सही उत्तर भेजने वाले लॉटरी द्वारा चुने गये दो विजेता कृषकों के नाम हैं–

1. **श्री अशोक कुमार व्यास, 505, इन्दिरा कालोनी, संजय मेडीकल स्टोर के पास, जैसलमेर–345001**
2. **श्री कमलेश कुमार बॉयल पुत्र श्री महादेव राम ग्रा0–पोस्ट–भगेगा, तह0–नीम का थाना, जिला–सीकर–332714**

इस माह के प्रश्न हैं –

प्र.1 बाजरे के दानों में कितने प्रतिशत प्रोटीन पाया जाता है ?

प्र.2 लौकी की किन्ही दो संकर लम्बी किस्मों के नाम बतायें ?

तो आप भी उठाइये पैन व पोस्ट कार्ड और हमें लिख भेजिये इन दोनों प्रश्नों के सही जवाब इस पते पर –

उप निदेशक कृषि (सूचना), कमरा नम्बर 118, पंत कृषि भवन, जयपुर 302005

पशुपालन व दुग्ध उत्पादन

- पशुओं में खुरपका–मुँहपका तथा भेड़ों व बकरियों में फड़किया व माता रोग का टीका लगवाऐं।

रबी फसलों में समन्वित कीट–रोग प्रबन्धन

फसलों में अधिक से अधिक उपज प्राप्त करने एवं हानिकारक कीटों व बीमारियों से बचाने हेतु किसानों द्वारा रसायनों के अधिक तथा अनुचित प्रयोग के फलस्वरूप हमें कई समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है। इनमें पर्यावरण प्रदूषण, मनुष्य एवं जीव जन्तुओं पर हुए प्रभाव एवं हानिकारक कीटों में कीटनाशकों के प्रति प्रतिरोधक क्षमता का विकास प्रमुख है।

इन स्थितियों का दोषी रासायनिक दवायें नहीं बल्कि हमारी अज्ञानता है। यहां हम सरसों, चना एवं गेहूँ फसलों में कीट–रोग नियन्त्रण की ऐसी व्यावहारिक विधियों की जानकारी दे रहे हैं, जिन्हें अपनाकर किसान अपनी फसलों को उनके दुश्मनों से बचा सकते हैं।

सरसों

- भूमिगत कीट, सुषुप्तावस्था में पड़े कीड़ों के अण्ड़े व शंकु, खरपतवार तथा फसल के अवशेषों को नष्ट करने के लिए गर्मियों में खेत की गहरी जुताई करें।
- कीट व रोग प्रतिरोधी किस्में बुवाई के लिए काम में लेवें।
- मोयले कीट के प्रकोप से बचने के लिए 15 अक्टूबर से पहले बुवाई कर देनी चाहिए।
- उर्वरकों की संतुलित/अनुशंसित मात्रा ही प्रयोग करें।
- लीफ–माइनर से ग्रसित पत्तियों को तोड़कर जमीन में दबा देना चाहिये ताकि पत्तियों में छिपे अपादक व कृमिकोष नष्ट हो जायें।
- लीफ–माइनर की रोकथाम हेतु क्यूनालफॉस 25 प्रतिशत ई.सी. 600–700 मिली. या मिथाईल पैराथियॉन 50 प्रतिशत ई.सी. 500 मिली. पानी में घोलकर छिड़काव करें।

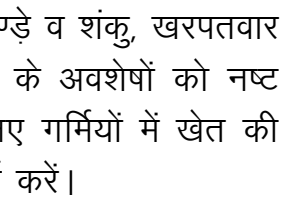

- पेन्टेडबग के प्रकोप से बचने के लिए यदि सम्भव हो तो बुवाई के तीन–चार सप्ताह बाद पहली सिंचाई कर देनी चाहिये।
- फसल का रंग सुनहरा होने पर ही कटाई कर लेनी चाहिए तथा फसल की जल्द से जल्द मढ़ाई कर लेनी चाहिए जिससे अधिक हानि न हो।
- मोयला, पेन्टेड बग व आरा मक्खी की रोकथाम हेतु क्यूनालफॉस 1.5 प्रतिशत या मैलाथियॉन 5 प्रतिशत या मिथाइल पैराथियॉन 2 प्रतिशत दवा या कार्बेरिल 5 प्रतिशत चूर्ण 20–25 किलो प्रति है0 की दर से प्रातः या सायं काल भुरकाव करें।
- कीड़ों की प्रारम्भिक अवस्था में नीम से बने कीटनाशकों का प्रयोग करें।
- झुलसा, तुलासिता व सफेद रोली रोगों

के लक्षण दिखाई देते ही 2 किलो मैन्कोजेब 75 प्रतिशत डब्ल्यू.पी. या 2.5 किलो जाईनेब 80 प्रतिशत डब्ल्यू. पी. प्रति है0 की दर से फसल की बुवाई के 50 व 70 दिन की अवस्था पर पानी में मिलाकर छिड़काव करें।

चना

- कीट व रोगप्रतिरोधी किस्में बुवाई के लिए काम में लेवें।
- बीज को बुवाई से पूर्व थाइरम 3 ग्राम दवा प्रति किलो बीज अथवा ट्राईकोडरमा 4–6 ग्राम प्रति किलो बीज की दर से उपचारित कर बोना चाहिए।
- अन्तराशष्य के रूप में चने की 7 लाईनों के बाद 2 लाईन सरसों की बुवाई करें।
- दो से तीन वर्ष का बिना दलहनी फसलों जैसे मक्का, गेहूं आदि के साथ फसल चक्र अपनायें।
- खेत में चिड़िया, मैना आदि पक्षियों को बैठने के लिए लकड़ी के अड्डे बनायें ताकि ये लटों को पकड़कर नष्ट करें।
- फेरोमोन ट्रेप – की सहायता से नर पतंगो को पकड़कर नष्ट करें।
- फली छेदक कीट की प्रारम्भिक अवस्था पर फसल में एक किलो बी.टी. अथवा एन.पी.वी. की 250 एल.ई. मात्रा का प्रति हैक्टर की दर से 10–15 दिन के अन्तराल पर तीन बार छिड़काव करें।
- फली छेदक के नियंत्रण के लिए फूल आने से पहले तथा फली लगने के बाद मेलाथियॉन 5 प्रतिशत या मिथाईल पैराथियॉन 2 प्रतिशत या

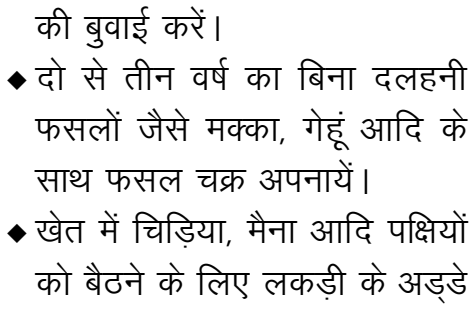

कार्बेरिल 5 प्रतिशत चूर्ण का 20–25 किलो प्रति है0 की दर से भुरकाव करें।

- कम्पोलिटिस क्लोरायडी नामक परजीवी 1.0–2.0 लाख प्रति हैक्टर की दर से 3–5 बार प्रयोग करें।
- कीटों की प्रारम्भिक अवस्था में नीम से बने कीटनाशकों का प्रयोग करें।

- कटवर्म व दीमक आदि की रोकथाम हेतु क्यूनालफॉस 1.5 प्रतिशत चूर्ण 25 किलो प्रति है0 की दर से आखरी जुताई से पूर्व भूमि में मिलावें।
- जड़ गलन व उखटा रोग की रोकथाम के लिए कार्बेन्डिजम 75 प्रतिशत डब्ल्यू.पी. 2 ग्राम या थाइरम 2.5 ग्राम प्रति किलो बीज की दर से उपचारित करें। अथवा 6–8 ग्राम ट्राईकोडर्मा मित्र फफूंद का प्रति किलो बीज की दर से उपचार कर बोना चाहिए।
- झुलसा रोग के लक्षण दिखाई देते ही मैन्कोजेब 2 ग्राम या कॉपर

आक्सीक्लोराइड 3 ग्राम या घुलनशील गंधक 2 ग्राम का प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।

गेहूँ

- खरीफ फसलों की खेत से कटाई के बाद खेत की गहरी जुताई करें।
- फसल को दीमक के प्रकोप से बचाने के लिये खेत में अच्छी सड़ी हुई गोबर की खाद उपयोग में लेवें। बेहतर होगा वर्मीकम्पोस्ट तैयार कर उपयोग में लिया जाये।
- कीट व रोग प्रतिरोधी प्रमाणित किस्मों के स्वस्थ बीज को उपचारित कर बुवाई के काम में लेवें।
- खाद व उर्वरकों का उपयोग संतुलित मात्रा में सिफारिश अनुसार ही करें। अधिक मात्रा में नाइट्रोजन युक्त उर्वरकों का उपयोग फसल में कीट प्रकोप की संभावना बढ़ाता है।
- दीमक नियंत्रण हेतु खेत व आसपास निर्मित उनके घरों (बांदकों) को ऊपर से तोड़कर नष्ट करें। क्लोरोपायरीफॉस 20 ई.सी. दवा 4 लीटर प्रति हैक्टर की दर से सिंचाई के साथ देवें। यह क्रिया भूमिगत रानी दीमक को नष्ट कर देगी और खेत से स्वतः ही दीमक का सफाया हो जायेगा। खड़ी फसल में एक लीटर नीम का तेल प्रति बीघा सिंचाई के साथ देने पर दीमक का जैविक नियंत्रण किया जा सकता हैं।
- तना छेदक या शीर्ष भेदक कीटों की रोकथाम के लिए परजीवी कीट ट्राईकोग्रामा 50,000 प्रति हैक्टर प्रति सप्ताह छः बार फसल पर छोड़ें।
- झुलसा रोग से बचाने के लिए जनवरी के प्रथम सप्ताह से 15 दिन के अन्तराल पर 2.5 किलो जाईनेब 80 प्रतिशत डब्ल्यू.पी. या 2 किलो मैन्कोजेब 75 प्रतिशत डब्ल्यू.पी. या 3 किलो कॉपर ऑक्सीक्लोराइड 50 प्रतिशत डब्ल्यू. पी. प्रति हैक्टर का घोल बनाकर 3–4 बार छिड़काव करें।
- रोली रोधक किस्मों का प्रयोग करें जहाँ दूसरी किस्मों का प्रयोग किया

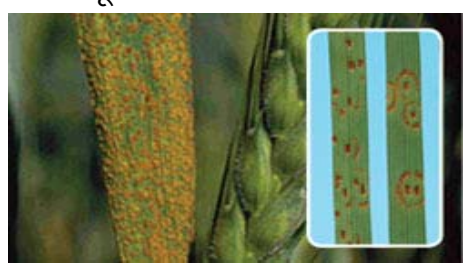

गया हो वहाँ सुरक्षात्मक उपाय के रूप में सुबह या शाम के समय 25 किलो गंधक चूर्ण का प्रति हैक्टर की दर से 15 दिन के अन्तराल पर 2–3 बार भुरकाव करें।
- अनावृत कण्डवा एवं पत्ती कण्डवा रोगग्रस्त पौधों को उखाड़कर जला देवें ताकि रोग का और अधिक फैलाव न हो। रोग से बचाव हेतु मई–जून में बीज का सौर उपचार करें या बीज में बुवाई से पूर्व 2 ग्राम कार्बोक्सिन 75 प्रतिशत डब्ल्यू. पी. या कार्बेन्डिजम 75 प्रतिशत डब्ल्यू.पी. प्रति किलो बीज की दर से उपचारित करें।
- मोल्या रोग की रोकथाम हेतु 1–2 वर्ष तक गेहूँ की फसल के स्थान पर जौ की मोल्या रोग रोधी किस्म आर.डी. 2052 या आर.डी. 2035 या आर.डी. 2503 किस्म काम में लेवें। जिस खेत में रोग का अधिक प्रकोप हो वहां खेत में बुवाई से पहले कार्बोफ्यूरॉन 3 प्रतिशत कण 45 किलो प्रति हैक्टर की दर से भूमि में ऊर कर बुवाई करें।

- ईयर कोकल रोग की रोकथाम हेतु बीज को पानी में 20 प्रतिशत नमक के घोल से उपचारित कर साफ पानी से धोकर छाया में सुखाने के उपरान्त बोयें।

ऐसे मंगवायें "खेती री बातां"

घर बैठे वर्षभर **खेती री बातां** अखबार मंगवाने के लिये अपने नजदीकी कृषि कार्यालय में सम्पर्क करें या आहरण वितरण अधिकारी, कृषि आयुक्तालय कमरा नं. 250, पंत कृषि भवन, जयपुर के नाम 12/– रुपये का मनीआर्डर भेजें। **स्वयं का साफ–साफ डाक का पूरा पता, पिन कोड नंबर व मोबाइल नंबर अवश्य लिखें।**

डाक पं.सं. RJ/JPC/M-16/2012-14

आर.एन.आई – 70296/98

प्रेषक–

उप निदेशक कृषि (सूचना)

118, पंत कृषि भवन,

जयपुर–302005

प्रेषिति–

कुष्माण्ड कुल की सब्जियों की उन्नत खेती

कुष्माण्ड कुल को कद्दूवर्गीय सब्जियों के नाम से भी जाना जाता है। इन सब्जियों की खेती करके किसान अच्छा लाभ प्राप्त कर सकते हैं।

जलवायु व मृदा :– अच्छे जल निकास वाली हल्की दोमट भूमि तथा गर्म व शुष्क मौसम इनकी खेती के लिए उपयुक्त होता है। प्रकाश व तापमान के घटने–बढ़ने से नर फूल अधिक तथा मादा फूलों की संख्या कम होती है।

प्रमुख किस्में

लौकी : पूसा समर प्रोलिफिक लोंग,पूसा समर प्रोलिफिक राउण्ड, पूसा मंजरी (संकर गोल), पूसा नवीन, पूसा मेघदूत (संकर लम्बी), अर्का बहार।

कद्दू (काशीफल) : पूसा विश्वास, पूसा अलंकार, अर्का चन्दन, पूसा हाइब्रिड–1

तरबूज : शुगर बेबी, असाही यामेटो, दुर्गापुरा–मीठा, दुर्गापुरा–केसर, अर्काज्योति (संकर किस्म), मधु (संकर किस्म)।

खरबूजा : दुर्गापुरा मधु, पंजाब सुनहरी, पंजाब हाईब्रिड, अर्काजीत, हरा मधु, पूसा मधुरस।

चिकनी तुरई : गलगल तुरई (पूसा चिकनी), सलैक्शन–99, कल्याणपुर चिकनी, पूसा सुप्रिया।

धारीदार तुरई : पूसा नसदार, कल्याणपुर धारीदार, अर्का सुमित, अर्का सुजाता।

खीरा : बालम खीरा, पॉइनसेट, पूसा संयोग (संकर किस्म), जापानीज लोंग ग्रीन, पूसा अलंकार।

करेला : कोयम्बटूर लोंग, पूसा दो मौसमी, प्रिया, अर्का हरित, पूसा विशेष, महिको करेला, ग्रीन लोंग, जयपुर लोकल।

टिण्डा : बीकानेरी ग्रीन, दिल पसन्द, टिण्डा लुधियाना (एस–48), हिसार सलैक्शन–1, अर्का टिण्डा, जयपुर लोकल रोएंदार।

ककड़ी : लखनऊ अगेती, अर्का शीतल।

पेठा : कोयम्बटूर–1, कोयम्बटूर–2, एस.–1

बीज दर

लौकी, काशीफल, करेला, तरबूज, तुरई व टिण्डे का 4 से 5 किलो एवं खरबूजे का 1.5 से 2 किलो तथा खीरा एवं ककड़ी का 2 से 2.5 किलो बीज प्रति हैक्टर काम में लेवें।

बुवाई का समय

ग्रीष्मकालीन फसल के लिये तरबूज, खरबूजा, ककड़ी, तुरई, खीरा, लौकी, कद्दू, करेला तथा टिण्डे की बुवाई फरवरी–मार्च में करना उचित रहता है।

बीज उपचार

बीमारियों की रोकथाम के लिये बीज को कार्बेन्डिजम 2 ग्राम दवा प्रति किलो बीज के हिसाब से उपचारित कर बोयें।

बुवाई

अगेती फसल लेने हेतु फरवरी मार्च में बीजों को सीधे खेत में न बोकर प्लास्टिक की थैलियों में बोया जा सकता है। थैलियों में 1/3 भाग चिकनी मिट्टी, 1/3 भाग बालू व 1/3 भाग मींगनी या गोबर की खाद मिलाकर एक थैली में दो बीज बोयें।

उपयुक्त तापमान होने पर पौधों को स्थानांतरित कर खेत में लगाऐं। सीधे खेत में बोने के लिए बीज को बुवाई से पूर्व 24 घंटे पानी में भिगोने के बाद टाट में बांध कर 24 घंटे रखें।

लौकी की बुवाई के समय कतारों एवं पौधों के बीच 2.5 से 3.0× 0.75 मीटर, कद्दू की 3.0 से 4.0×1.25 मीटर, करेला की 1.25× 0.50 मीटर, तरबूज की 2.5× 1.00 मीटर, खरबूजे की 2.0× 0.60 मीटर, ककड़ी के लिये 1.5× 0.60 मीटर की दूरी रखें। तुरई, खीरा एवं टिण्डा की फरवरी–मार्च में 1.5× 0.50 से 0.75 मीटर की दूरी रखें।

यदि कुष्माण्ड कुल की सब्जियों की बुवाई नालियों में करें तो एक स्थान पर दो–तीन बीज बोऐं तथा अंकुरण के कुछ दिन बाद 1–2 पौधों को रखकर शेष को हटा देवें।

खाद व उर्वरक

200–250 क्विंटल गोबर की खाद, 100 किलो डी.ए.पी.+20 किलो यूरिया एवं 80 किलो म्यूरेट ऑफ पोटाश बुवाई के समय भूमि में मिलाकर देवें। 50 किलो यूरिया बुवाई के 25–30 दिन बाद व 50 किलो यूरिया फूल आने के समय देना चाहिये।

कीट–व्याधि नियंत्रण

लाल भृंग : कार्बेरिल 5 प्रतिशत चूर्ण 5 किलो प्रति बीघा भुरकाव करें या आधा ग्राम ऐसीफेट 75 एस. पी. घुलनशील चूर्ण का प्रति लीटर पानी की दर से छिड़काव करें एवं 15 दिन के अन्तर पर छिड़काव दोहरावें।

फल मक्खी : काणें फलों को तोड़कर नष्ट करें। मैलाथियान 50 ई.सी. या डाइमिथोऐट 30 ई.सी. एक मिलीलीटर दवा प्रति लीटर पानी की दर से छिड़काव करें।

तुलासिता, झुलसा एवं एन्थ्रेक्नोज़ : मैन्कोजेब 2 ग्राम प्रति लीटर पानी के घोल का छिड़काव करें।

छाछ्या : केराथियॉन एल.सी. 1 मिलीलीटर दवा प्रति लीटर पानी के घोल का छिड़काव 15 दिन के अन्तराल पर करें।

बाजरा–पौष्टिक अनाज

बाजरा खाओ–कुपोषण भगाओ

- ★ ऊर्जा से भरपूर
- ★ प्रोटीन का उत्तम स्त्रोत
- ★ खनिज लवणों, रेशे से भरपूर
- ★ मोटापा, मधुमेह व दिल के मरीजों के लिये उत्तम अनाज
- ★ कम खर्च में अधिक पोषण

बाजरे से मूल्य संवर्धित उत्पाद बनाएं– स्वाद से भरपूर पोषण पाएं ऊर्जा : 350–370 किलो कैलोरी, प्रोटीन : 9–14 प्रतिशत, खनिज–लवण : 2–3 प्रतिशत, रेशा : 1–2, प्रतिशत, वसा : 4–6 प्रतिशत

लड्डू

इडली

बिस्कुट

बाजरे की रोटी

सस्ते स्वादिष्ट पौष्टिक बनाने में आसान

बच्चे, बूढ़े, गर्भवती व धात्री माँ के भोजन में विभिन्नता व पौष्टिकता लायें।

फार्म–4

(नियम 8 देखिये)

खेती री बातां

1.प्रकाशन स्थान	पंत कृषि भवन,जनपथ,जयपुर
2.प्रकाशन अवधि	मासिक
3.मुद्रक का नाम	डॉ. आर. वेंकटेश्वरन
क्या भारत नागरिक है	हां
पता	आयुक्त कृषि, कृषि विभाग,पंत कृषि भवन,जनपथ,जयपुर
4.प्रकाशक का नाम	डॉ. आर. वेंकटेश्वरन
क्या भारत का नागरिक है	हां
पता	आयुक्त कृषि,कृषि विभाग,पंत कृषि भवन,जनपथ,जयपुर
5,सम्पादक का नाम	श्री भंवरा राम कड़वा
क्या भारत का नागरिक है	हां
पता	उप निदेशक,कृषि (सूचना) कृषि विभाग,पंत कृषि भवन,जयपुर।
6.उन व्यक्तियों के नाम व पते जो समाचार पत्र के स्वामी हों तथा समस्त पूंजी के एक प्रतिशत के साझेदार या हिस्सेदार हों ।	कृषि विभाग,पंत कृषि भवन,जनपथ,जयपुर।

मैं डॉ. आर. वेंकटेश्वरन एतद् द्वारा घोषित करता हूं कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिये गये विवरण सत्य हैं।

डॉ. आर. वेंकटेश्वरन

स्वत्वाधिकारी कृषि विभाग राजस्थान सरकार के लिये प्रकाशक एवं मुद्रक आयुक्त कृषि, कृषि विभाग राजस्थान, जयपुर द्वारा कृषि सूचना मुद्रणालय जयपुर से मुद्रित और पंत कृषि भवन, जनपथ, जयपुर से प्रकाशित।

प्रकाशक	– आर. वेंकटेश्वरन
सम्पादक	– भंवरा राम कड़वा
सह सम्पादक	– पूनम चौधरी
परामर्श	– शिवजी राम कटारिया
डिजाइनर	– आर. मैसी